MIC-1	हिंदी साहित्य का इतिहास

COURSE OBJECTIVES

हिन्दी साहित्य के हजार वर्षों से अधिक के इतिहास के भाषा-साहित्य के निर्माण की प्रक्रिया से भलीभांति अवगत हुआ जा सकता है। हिन्दी भक्तिकाव्य भारत की सभी भाषाओं के साहित्य में व्याप्त अखिल भारतीय आंदोलन का हिस्सा था। इसके साहित्य के निर्माण में विभिन्न धर्मों, संप्रदायों एवं जातियों का अभूतपूर्व योगदान रहा है। रीतिकाल हिन्दी का एक विशिष्ट काल है। भक्तिकाल से इसकी भिन्नता को आप समझ सकेंगे। आधुनिक काल कविता ही नहीं, गद्य के भी विकास का काल है। इस पत्र के माध्यम से आधुनिकता के विभिन्न स्वरूपों की पड़ताल के साथ साहित्य और समाज के संबंध के नवीन स्वरूप को पहचाना जा सकता है।

	MIC-1 (Theory: 03 Credits)		
Unit	**Topic to be covered**	**No. of Lectures**	**L-T-P 3-1-0 Per weak**
1.	• आदिकालीन साहित्य: नामकरण, काल-निर्धारण, प्रमुख प्रवृत्तियाँ एवं विशेषताएं • निर्गुण एवं सगुण भक्ति काव्य: धाराएँ एवं प्रवृत्तियाँ • रीतिकाल : नामकरण, काल-निर्धारण; रीतिबद्ध, रीतिमुक्त और रीतिसिद्ध काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ एवं विशेषताएं	14	
2.	• अधुनिक काव्य : भारतेन्दु युग – नामकरण, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, प्रमुख कवि-लेखक एवं संपादक • द्विवेदी युग: नामकरण, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, प्रमुख कवि-लेखक एवं संपादक • छायावाद : नामकरण, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, प्रमुख कवि-लेखक	16	
3.	• प्रगतिवाद, उत्तर छायावाद, प्रयोगवाद, नई कविता, सठोत्तरी कविता : नामकरण, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, प्रमुख कवि-लेखक • हिन्दी गद्य और उसकी विभिन्न विधाओं का विकास	15	
	कुल	45	

COURSE OUTCOMES

जनता की चित्तवृत्ति के बदलते स्वरूप के साथ साहित्य के बदलते स्वरूप के संबंध को आप भलीभांति समझ सकेंगे। इस पत्र के माध्यम से विभिन्न युगों के काव्य/ साहित्य के आपसी संबंधों के साथ उनके बीच के अंतर्विरोधों को भी समझा जा सकता है। इस पत्र के माध्यम से समाज और साहित्य के संबंधों के स्वरूप की भी आप व्याख्या कर सकेंगे।

सहायक पुस्तकें –

1. हिंदी साहित्य का इतिहास : आचार्य रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
2. हिंदी साहित्य की भूमिका : आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
3. हिंदी साहित्य का आदिकाल :आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना
4. हिंदी साहित्य का इतिहास :लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
5. हिंदी साहित्य का इतिहास : संपादक डॉ नगेंद्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
6. हिंदी साहित्य का इतिहास दर्शन : नलिनविलोचन शर्मा, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना
7. साहित्य की इतिहास दृष्टि : मैनेजर पांडेय, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

MIC-2	हिंदी कविता : मध्यकाल

COURSE OBJECTIVES

हिंदी कविता का बहुत बड़ा हिस्सा इस पत्र से संबंधित है। आदिकालीन कविता हिंदी में कविता का निर्माण काल है। इसकी एक धारा के प्रमुख कवि विद्यापति हैं, जिन्हें अंतप्रांतीय लोकप्रियता हासिल है। भक्तिकाल को हिंदी साहित्य के इतिहास में स्वर्णकाल कहा जाता है। इस काल की विभिन्न धाराओं से जुड़े कबीर, जायसी, सूर, तुलसी जैसे महान कवि हुए हैं। इन कवियों के काव्य के अध्ययन-आस्वादन से पाठकों के काव्यविवेक को तो दिशा मिलेगी ही, अपने देश और समाज को समझने में भी भरपूर मदद मिलेगी साथ ही रीतिकाल के बिहारी एवं घनानन्द जैसे श्रेष्ठ कवियों की कविता के अध्ययन से हिन्दी कविता के एक भिन्न किन्तु महत्वपूर्ण स्वरूप से परिचय होगा।

	MIC-2 (Theory: 03 Credits)		
Unit	Topic to be covered	No. of Lectures	L-T-P 3-1-0 Per weak
1.	• **विद्यापति** (विद्यापति पदावली संपादक, रामवृक्ष बेनीपुरी) • देख- देख राधा रूप अपार ......(2) • जय जय भैरवि असुर ....(3) • तातल सैकत बार -बिन्दु सम....(254) • **कबीर** (कबीर ग्रंथावली : संपादक बाबू श्याम सुंदर दास) • अकथ कहानी प्रेम की ....(156) • लोका मति के भोरा रे.........(402) ➢ **मलिक मुहम्मद जायसी** (पद्मावत: संपादक वासुदेवशरण अग्रवाल) • मानसरोदक खण्ड	15	
2.	➢ **सूरदास** (श्रीकृष्ण बाल-माधुरी, गीता प्रेस, गोरखपुर) • कहन लागे मोहन मैया-मैया...............(88) • मैया! हौं गाइ चरावन जैहों ....(281) ➢ **तुलसीदास** : रामचरित मानस(बाल कांड) गीता प्रेस गोरखपुर • धनुर्भंग प्रसंग (दोहा संख्या : 249 से 262 तक)	15	
3.	➢ **बिहारी** (बिहारी रत्नाकर : संपादक श्री जगन्नाथदास रत्नाकर)दोहा संख्या- 01,08,16,20,32,33,38,51,63,67	15	

	➢ घनानंद (घनानंद कवित्त, भूमिका : आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र) • भये अति निठुर, मिटाय पहचानि डारी...(7) • तब तौ छवि पीवत जीवत है.............(13) • रावरे रूप की रीति अनूप............ (15) • अति सूधो सनेह को मारग है..........(82)		
	कुल	45	

COURSE OUTCOMES

मध्यकाल की हिंदी कविता की विभिन्न छवियों से आप परिचित हो सकेंगे। इन कवियों के पाठगत अध्ययन से आप साहित्य के साथ सामाजिक संबंधों की पड़ताल भी कर सकेंगे। इन कविताओं के पाठ से आपकी संवेदना के विकास के साथ आपकी भाषिक समृद्धि भी होगी।

सहायक पुस्तकें –

1. विद्यापति : शिव प्रसाद सिंह, लोकभारती, इलाहाबाद
2. जायसी : विजयदेव नारायण साही, हिन्दुस्तान एकेडमी, इलाहाबाद
3. सूफीमत: साधना और साहित्य : राम पूजन तिवारी, ज्ञानमंडल, वाराणसी
4. कबीर : हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
5. अकथ कहानी प्रेम की: पुरुषोत्तम अग्रवाल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
6. सूरदास :रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
7. तुलसीदास : रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
8. सूर साहित्य : हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
9. मीरा का काव्य : विश्वनाथ त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
10. बिहारी : विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
11. घनानन्द और स्वच्छन्द काव्यधारा: मनोहर लाल गौड़

MIC-3: आधुनिक हिंदी कविता : छायावाद तक

Course Objectives

इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी 1850 ई० से 1936 ई० तक की परिचय प्राप्त करने के साथ–साथ उस कालखण्ड के महत्वपूर्ण कवियों के काव्यगत अवदानों से परिचित हो सकेंगे।

	MIC-3 : आधुनिक हिंदी कविता (छायावाद तक) (Theory: 03 Credits)		
Unit	**Topics to be covered**	**No. of Lectures**	**L.T.P 3-1-0**
1	• भारतेन्दु – भारत दुर्दशा निज भाषा उन्नति अहै : प्रारंम्भिक दस दोहे	06	
2	• मैथिलीशरण गुप्त – संतान, सखि वे मुझसे कहकर जाते (यशोधरा)	04	
3	• जय शंकर प्रसाद – आँसू– प्रारंम्भिक आठ छंद	04	
4	• सूर्यकांत त्रिपाठी निराला – भिक्षुक, विधवा	04	
5	• सुमित्रानंदन पंत – प्रथम रश्मि, मौन निमंत्रण	04	
6	• महादेवी वर्मा – जो तुम आ जाते एक बार, मधुर–मधुर मेरे दीपक जल	04	
7	• सुभद्रा कुमारी चौहान–झाँसी की रानी, वीरों का कैसा हो बसंत	04	
	Total	**30**	**L-(30)+T(10)=40**

Course Outcomes

कविता के पाठगत विश्लेषण के द्वारा विद्यार्थी अपनी विश्लेषणात्मक चेतना विकसित कर सकेंगे। साथ ही भारतीय नवजागरण एवं राष्ट्रीय आंदोलन को समझने की एक नयी दृष्टि का भी विकास संभव हो सकेगा। प्रतियोगिता परीक्षा की दृष्टि से भी यह उनके लिए सकारात्मक सिद्ध होगा।

सहायक पुस्तकें :–

1. आधुनिक हिंदी कविता का इतिहास : डॉ. नंद किशोर नवल, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली,
2. मैथिलीशरण : डॉ. नंद किशोर नवल, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली
3. छायावाद : डॉ. नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
4. निराला कृति से साक्षात्कार : नन्द किशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
5. आधुनिक हिंदी कविता : डॉ. विश्वनाथ तिवारी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

21.09.2023 21/09/23 34. 21-09-2023 21.9.23 21.9.23

6. महादेवी : इन्द्रनाथ मदान, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
7. जय शंकर प्रसाद : रमेश चन्द्र शाह, साहित्य अकादेमी, दिल्ली

SEMESTER - IV

MIC - 4: आधुनिक हिन्दी कविता : छायावाद के बाद

COURSE OBJECTIVES

छायावाद के बाद हिन्दी कविता के विकास को समझने के लिए उस दौर के महत्त्वपूर्ण कवियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से अवगत होना जरूरी है। इस काल की कविता की प्रवृत्तियों एवं काव्यगत वैशिष्ट्य को समझने के पश्चात ही विद्यार्थियों की आलोचनात्मक क्षमता का विकास संभव होगा। कविता में हो रहे बदलाव को आत्मसात करने एवं तत्कालीन सामाजिक परिदृश्य से अवगत होने के लिए इस पाठ की आवश्यकता होगी।

MIC - 4: आधुनिक हिन्दी कविता : छायावाद के बाद (Theory: 03 Credits)			
Unit	**Topics to be covered**	**No. of Lectures**	**L-T-P 3-1-0 Per Week**
1	**केदारनाथ अग्रवाल** – माँझी ! न बजाओ वंशी, वह जन मारे नहीं मरेगा **नागार्जुन** – बादल को घिरते देखा है; शासन की बंदूक; अकाल और उसके बाद	10	
2	**रामधारी सिंह 'दिनकर'** – रश्मि रथी (तृतीय सर्ग) **माखनलाल चतुर्वेदी** – झरना; कैदी और कोकिला, नाश का त्यौहार (हिमकिरीटिनी)	10	
3	**भवानीप्रसाद मिश्र** – सतपुड़ा के जंगल; गीत-फरोश (दूसरा सप्तक) **रघुवीर सहाय** – पढ़िए गीता; रामदास; हँसो हँसो जल्दी हँसो, नेता क्षमा करें	10	
	Total	30	30 (L) + 10 (T) = 40

21.09.2023 21/09/23 21.9.23 21-09-2023 21-9-23

Course outcomes

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी छायावाद के बाद हिन्दी कविता में हो रहे बदलावों से अवगत होंगे। छायावादोत्तर हिन्दी कविता की प्रवृत्तियों एवं काव्यगत वैशिष्ट्य को समझ सकेंगे। उनकी कविता की समझ एवं आलोचनात्मक क्षमता में वृद्धि होगी। इस दौरान वे इस कालखण्ड के कवियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से भी परिचित होंगे।

सहायक पुस्तकें –

1. प्रतिनिधि कविताएँ : केदारनाथ अग्रवाल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
2. प्रतिनिधि कविताएँ : नागार्जुन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
3. कुरुक्षेत्र : रामधारी सिंह दिनकर, राजपाल प्रकाशन, दिल्ली
4. काव्य–कुसुम : सं. गणेशानंद झा, गायत्री देवी, मोतीलाल बनारसी दास प्रकाशन, पटना
5. सन्नाटे का छंद : सं. अशोक वाजपेयी, वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर
6. मन एक मैली कमीज है : सं. नंदकिशोर आचार्य, वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर
7. प्रतिनिधि कविताएँ : रघुवीर सहाय, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
8. चाँद का मुँह टेढ़ा है : ग. मा. मुक्तिबोध, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली
9. आधुनिक हिन्दी कविता का इतिहास : नंद किशोर नवल, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली
10. कवि अज्ञेयः नंद किशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
11. कविता के नये प्रतिमान : नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
12. नयी कविता और अस्तित्ववाद : रामविलाश शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
13. तार सप्तक : सं. अज्ञेय, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली
14. दूसरा सप्तक : सं. अज्ञेय, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली
15. तीसरा सप्तक : सं. अज्ञेय, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली

16. आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ : नामवर सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

17. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास : रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

18. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास : लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय

19. हिन्दी काव्य समीक्षा के प्रतिमान : महेश तिवारी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

SEMESTER - V

MIC - 5 : भारतीय काव्यशास्त्र

COURSE OBJECTIVES

इस पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय काव्यशास्त्र से परिचित कराना है। साथ ही, वे काव्य के विभिन्न उपकरणों अलंकार एवं छंद का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।

MIC - 5 : भारतीय काव्यशास्त्र (Theory: 03 Credits)			
Unit	Topics to be covered	No. of Lectures	L-T-P 3-1-0 Per Week
1	भारतीय काव्यशास्त्र का सामान्य परिचय, काव्य-लक्षण, काव्य-प्रयोजन	10	
2	प्रमुख अलंकारों के लक्षण उदाहरण– श्लेष, यमक, वक्रोक्ति, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति	10	
3	प्रमुख छंदों के लक्षण–उदाहरण – दोहा, चौपाई, रोला, सोरठा, कवित्त, सवैया, छप्पय	10	
	Total	30	30 (L) + 10 (T) = 40

Course outcomes

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात विद्यार्थी काव्यशास्त्र की मौलिक अवधारणाओं से परिचित होंगे। रस, अलंकार के विभिन्न भेदों एवं उनके उपयोग से भली भांति अवगत हो सकेंगे।

सहायक पुस्तकें –

1. काव्य के तत्व : आचार्य देवेंन्द्रनाथ शर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
2. भारतीय साहित्यशास्त्र कोश : डॉ. राजवंश सहाय 'हीरा', बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना
3. भारतीय आलोचना - शास्त्र : डॉ. राजवंश सहाय 'हीरा', बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना

4. पाश्चात्य साहित्यशास्त्र कोश : डॉ. राजवंश सहाय 'हीरा', बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना
5. साहित्यालोचन : डॉ. श्याम सुंदर दास, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, नई दिल्ली
6. भारतीय काव्य चिंतन, डॉ. शोभा कांत मिश्र, अनुपम प्रकाशन, पटना
7. पाश्चात्य काव्यशास्त्र : डॉ. तारकनाथ बाली, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
8. भारतीय काव्यशास्त्र एवं पाश्चात्य साहित्य : चिंतन, डॉ. सभापति मिश्र, जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
9. पाश्चात्य साहित्य चिंतन : निर्मला जैन, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
10. अरस्तु का काव्यशास्त्र : अनुवादक : डॉ. नगेंद्र एवं महेंद्र चतुर्वेदी, हिंदी अनुसंधान परिषद्, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
11. साहित्यालोचन : सिद्धांत और अध्ययन, डॉ. सीताराम दीन, भारती भवन, पटना
12. पाश्चात्य काव्य चिंतन – डॉ. शोभाकांत मिश्र, अनुपम प्रकाशन, पटना

SEMESTER - V

MIC - 6: हिंदी की साहित्यिक विधाएँ : उद्‌भव और विकास

COURSE OBJECTIVES

हिंदी की साहित्यिक विधाओं के स्वरूप, उद्‌भव एवं विकास की अवधारणा को संपूर्णता में समझाना समझना इस पाठ का मुख्य उद्देश्य है। इस पाठ के माध्यम से विभिन्न साहित्यिक विधाओं की विशिष्टता एवं महत्त्व से विद्यार्थियों को परिचित कराना तथा विभिन्न विधाओं के बीच के अंतर को स्पष्ट करना आवश्यक है ताकि विद्यार्थी विधाओं के विकास एवं आधुनिकता के संबंध को समझ सकें।

MIC - 6 : हिंदी की साहित्यिक विधाएँ : उद्‌भव और विकास (Theory: 03 Credits)			
Unit	Topics to be covered	No. of Lectures	L-T-P 3-1-0 Per Week
1	साहित्य का स्वरूप : संक्षिप्त परिचय (भेद लक्षण एवं तत्त्व : भारतीय एवं पाश्चात्य मत) हिंदी की साहित्यिक विधाएँ : सामान्य परिचय एवं उद्‌भव और विकास पद्य : महाकाव्य, खण्डकाव्य, मुक्तककाव्य, चम्पूकाव्य, स्फुटकाव्य	10	
2	गीति काव्य, प्रगीत, नयी कविता, नवगीत गद्यः उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, निबंध, आलोचना, यात्रा-वृत्तांत	10	

3	पत्र–साहित्य, डायरी, रिपोर्ताज, रेखाचित्र/शब्दचित्र, संस्मरण, जीवनी, आत्मकथा साहित्यिक विधाओं में अंतर • महाकाव्य और खण्डकाव्य • प्रबंध काव्य और मुक्तककाव्य • उपन्यास और कहानी • नाटक और एकांकी • संस्मरण और यात्रा–वृत्तांत • जीवनी और आत्मकथा • रेखाचित्र और संस्मरण	10	
	Total	**30**	**30 (L) + 10 (T) = 40**

Course outcomes

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात विद्यार्थी साहित्यिक विधाओं के स्वरूप एवं इतिहास के साथ–साथ उनके उद्‌भव एवं विकास की अवधारणा को समझ पायेंगे। वे विभिन्न साहित्यिक विधाओं की विशिष्टता एवं महत्त्व के साथ ही विभिन्न विधाओं के मध्य मौलिक अंतर से अवगत होंगे।

सहायक पुस्तकें –

1. हिंदी साहित्य का इतिहास : रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
2. हिंदी साहित्य का इतिहास : संपादक डॉ. नगेंद्र, पेपरबैक
3. साहित्यालोचन : डॉ. श्यामसुंदर दास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
4. कविता क्या है : विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
5. साहित्य विधाओं की अंत : प्रकृति : डॉ. हरिमोहन
6. हिंदी का गद्य साहित्य : रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, नयी दिल्ली
7. कविता के नये प्रतिमान : नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली

21.09.2023
21-09-2023
21.9.23
21.9.23
21/09/23

8. हिंदी गद्यः विन्यास और विकास, रामस्वरुप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
9. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य सिद्धांत : गणपति चंद्र गुप्त, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद
10. हिंदी उपन्यास का विकास : मधुरेश, लोकभारती, प्रकाशन, इलाहाबाद
11. हिंदी कहानी का विकासः मधुरेश, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
12. हिंदी आलोचना का विकासः मधुरेश, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
13. नयी कविताः नंददुलारे वाजपेयी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
14. हिंदी साहित्य : उद्‌भव और विकासः हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
15. हिंदी काव्य का इतिहास : रामस्वरुप चतुर्वेदी, राज कमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
16. हिंदी नाटक : बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली
17. हिंदी साहित्य कोश : सं. डॉ. धीरेंद्र वर्मा (प्रधान), ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी
18. हिंदी आलोचना की पारिभाषित शब्दावली : डॉ. अमरनाथ, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
19. हिंदी कहानी का विकास : डॉ. गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
20. साहित्यालोचनः सिद्धांत और अध्ययन – डॉ. सीताराम दीन – भारती भवन, पटना
21. भारतीय काव्य चिंतन, डॉ. शोभाकान्त मिश्र, अनुपम प्रकाशन, पटना
22. पाश्चात्य काव्य चिंतन, डॉ. शोभाकान्त मिश्र, अनुपम प्रकाशन, पटना
23. बोलती रेखाएँ – डॉ. उषारानी सिंह – मांगलिका प्रकाशन, पटना
24. कुरान शरीफ और तुलसीचौरा (रेखाचित्र)– डॉ. उषा रानी सिंह

42.

21.09.2023

21-09-2023

21/09/23

21.9.23

21-9-23

21/9/23

SEMESTER - VI

MIC - 7: प्रयोजनमूलक हिंदी

COURSE OBJECTIVES

वर्त्तमान समय में प्रयोजनमूलक हिंदी का अध्ययन हिंदी के विद्यार्थियों के लिए महत्वपूर्ण हो गया है। प्रयोजनमूलक हिंदी के विभिन्न प्रकारों की जानकारी एवं उसके स्वरूप से परिचित होना आज की मांग है। सरकारी कार्यालयों तथा व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में हिंदी का प्रयोग करने की विधि को सीखना विद्यार्थियों के लिए आवश्यक हो गया है। इस पाठ्य का मुख्य उद्देश्य प्रयोजनमूलक हिंदी के विभिन्न आयामों से विद्यार्थी को परिचित कराना है।

MIC - 7: प्रयोजनमूलक हिंदी (Theory: 03 Credits)			
Unit	**Topics to be covered**	**No. of Lectures**	**L-T-P 3-1-0 Per Week**
1	प्रयोजनमूलक हिंदी : स्वरूप, व्यवहार क्षेत्र, शैक्षिक संदर्भ : उद्देश्य और सीमा बोलचाल की हिंदी, मानक हिंदी और साहित्यिक हिंदी	12	
2	प्रयोजनमूलक हिंदी के प्रमुख प्रकारः न्यायालय में हिंदी, बैंक में हिन्दी रेलवे में हिंदी, विविध सरकारी कार्यालयों एवं संस्थाओं में हिंदी	06	
3	भाषा व्यवहार : सरकारी पत्राचार, टिप्पण, प्रारूपण, सार-लेखन, विज्ञापन-लेखन	12	
	Total	30	30 (L) + 10 (T) = 40

Course outcomes

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी प्रयोजनमूलक हिंदी के स्वरूप, व्यवहार एवं उनके प्रकारों से अवगत होंगे। साथ ही साथ सरकारी कार्यालयों एवं व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में प्रयोग की जाने वाली हिंदी को सीख सकेंगे।

सहायक पुस्तकें -

1. प्रयोजमूलक हिंदी, माधव सोनटक्के, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
2. प्रयोजनमूलक हिंदी, रामकिशोर शर्मा, श्यामा प्रकाश, इलाहाबाद
3. हिंदी भाषा का प्रयोजनमूलक स्वरुप, डॉ. चंद्र भाटिया, साहित्य भवन
4. प्रयोजनमूलक भाषा कार्यालयी हिंदी, कृष्ण कुमार गोस्वामी, कलिंगा प्रकाशन, दिल्ली
5. प्रयोजनमूलक कामकाजी हिंदी, डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
6. प्रयोजनमूलक हिंदी : संरचना और अनुप्रयोग, डॉ. रामप्रकाश, डॉ. दिनेश गुप्त, राधाकृष्ण प्रकाशन
7. प्रयोजनी हिंदी, सूर्य प्रसाद दीक्षित, भारत बुक सेंटर, लखनऊ
8. प्रयोजनमूलक हिंदी का अध्ययन, संपादक सुशील गुप्ता, जय भारती प्रकाशन, इलाहाबाद
9. मीडिया की भाषा, वसुधा गाडगिल
10. प्रारुपण, शासकीय पत्राचार और टिप्पण- लेखन विधि, राजेंद्र प्रसाद श्रीवास्तव
11. आधुनिक हिंदी व्याकरण और रचना, डॉ. वासुदेव नंदन प्रसाद भारती भवन, पटना

21.09.2023 21/09/23 21-09-2023 21/09/23 21.9.23 21.9.23

SEMESTER – VI

MIC – 8 हिन्दी कहानियाँ : पाठ

Course Objective –

कहानी हिन्दी साहित्य की सर्वाधिक नयी विधा है। इस पत्र के अध्ययन के द्वारा हिन्दी कहानी की विकास–प्रक्रिया को समझने में मदद मिलेगी। साथ ही 20वीं शताब्दी के अलग–अलग काल–खण्डों की कहानियों की संवेदना एवं शिल्प से परिचित हो सकेंगे।

(Theory : 3 Credits)

Unit	Topic to be covered	No. of Lectures	L.T.P
1	i) कानों में कंगना : राजा राधिका रमण प्रसाद सिंह ii) नमक का दारोगा : प्रेमचन्द	10	
2.	iii) कहानी का प्लॉट : आचार्य शिवपूजन सहाय iv) कहीं धूप कहीं छाया : बेनीपुरी v) विष के दाँत : आचार्य नलिन विलोचन शर्मा	10	
3.	vi) पंचलाइट : रेणु vii) वापसी : उषा प्रियवदा	10	
	कुल	30	L - 30 + T – 10 = **40**

Course Outcome –

इस पत्र के अध्ययन से हिन्दी कहानी के विकास–क्रम के साथ–साथ विविध काल–खण्डों की कहानियों के संवेदनात्मक धरातल की परख की क्षमता विकसित होगी। कहानी निस्संदेह साहित्य की सर्वाधिक मार्मिक विधा है। ऐसी स्थिति में राजा राधिका रमण प्रसाद सिंह से लेकर आचार्य नलिन विलोचन शर्मा, आचार्य शिवपूजन सहाय, प्रेमचंद, बेनीपुरी, जैनेन्द्र, रेणु और उषा प्रियंवदा जैसे उच्च–कोटि के कहानीकारों एवं उनकी कहानियों के विश्लेषण से समृद्ध ज्ञान–चेतना का विकास संभव हो सकेगा।

सहायक पुस्तकें–

1. कहानी : नयी कहानी– नामवर सिंह
2. हिन्दी कहानी का विकास – मधुरेश
3. नयी कहानी, नये सवाल – डॉ॰ सत्यकाम
4. नलिन विलोचन शर्मा, रचना संचयन, सम्पादक– गोपेश्वर सिंह
5. शिवपूजन सहाय रचनावली– बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना
6. प्रतिनिधि कहानियाँ– सम्पादक दिनेश प्रसाद सिंह, मोतीलाल बनारसी दास, पटना
7. दस प्रतिनिधि कहानियाँ– उषा प्रियंवदा, किताब घर, नई दिल्ली

21.09.2023 21/9/23 21.9.23 21-09-2023 21/09/23

SEMESTER – VII

MIC – 9 **हिन्दी उपन्यास : पाठ**

Course Objective –

उपन्यास का अर्थ, परिभाषा एवं विशेषताओं से परिचित तथा उपन्यास के तत्वों से अवगत हो सकेंगे, इस पत्र के अध्ययन से हिन्दी उपन्यास के विकास–क्रम में प्रेमचन्द, रेणु और आचार्य शिवपूजन सहाय जैसे उपन्यासकारों के संवेदना और शिल्प की जानकारी प्राप्त करने में समर्थ होंगे।

(Theory : 3 Credits)

Unit	Topic to be covered	No. of Lectures	L.T.P
1	i) निर्मला – प्रेमचन्द	10	
2.	ii) देहाती दुनिया : आचार्य शिवपूजन सहाय	10	
3.	iii) कितने चौराहे – रेणु	10	
	कुल	**30**	L - 30 + T – 10 = **40**

Course Outcome –

इस पत्र के अध्ययन से औपन्यासिक तत्वों के साथ–साथ हिन्दी उपन्यास के विकास–क्रम की जानकारी समृद्ध होगी। हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचन्द स्थापित उपन्यासकार हैं। हिन्दी उपन्यास का वास्तविक आरंभ प्रेमचन्द से होता है। ऐसी स्थिति में प्रेमचन्द के साथ–साथ बाद के उपन्यासकारों यथा–रेणु, और आचार्य शिवपूजन सहाय की सृजन प्रक्रिया को समझने में समर्थ सिद्ध होंगे।

सहायक ग्रन्थ–

1. निर्मला, प्रेमचन्द, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
2. कितने चौराहे, फणीश्वरनाथ रेणु, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
3. देहाती दुनिया– आचार्य शिवपूजन सहाय
4. प्रेमचन्द और उनका युग, रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
5. उपन्यास की संरचना, गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
6. प्रेमचन्द और भारतीय समाज, नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

~~SEMESTER – VIII~~

MIC- 10 **हिन्दी गद्य (विविध विधाएं) : पाठ**

Cource objective :-

हिन्दी गद्य की विविध विधाएँ साहित्य के विविध रंगों का पयार्य है। इस पत्र के अध्ययन से कथेतर गद्य की समझ विकसित होगीं निबन्ध, संस्मरण, आत्मकथा, डायरी और जीवनी– साहित्य के अनुशीलन से साहित्यिक समझ को परिपक्व करने में पूरी तरह सक्षम होंगे।

(Theory : 3 Credits)

Unit	Topic to be covered	No. of Lectures	L.T.P
1	(i) मजदूरी और प्रेम : सरदार पूर्ण सिंह (ii) उत्साह : रामचन्द्र शुक्ल	10	
2.	(i) अशोक के फूल : आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी (ii) आँगन का पंछी : विद्यानिवास मिश्र	10	
3.	(i) रामा : महादेवी वर्मा (ii) किन्नर देश : एक ऐतिहासिक दृष्टि (किन्नर देश में से) : राहुल सांकृत्यायन (iii) हिन्दी कविता और छन्द : रामधारी सिंह दिनकर	10	
	कुल	**30**	L - 30 + T – 10 = **40**

Course Outcome :-

हिन्दी गदय, साहित्य की नवीनतम विधा है। समकालीन परिप्रेक्ष्य में कथा– साहित्य को ही हिन्दी गदय का पर्याय मान लिया गया है। लेकिन कथा–साहित्य से इतर भी गदय की कई मर्मस्पर्शी विधाएँ जो संवेदना और शिल्प के स्तर पर जीवन को झंकृत करने में सक्षम है। प्रस्तुत पत्र के अध्ययन से निश्चय ही गदय की अन्य विधाओं की मार्मिकता और ह्रदयस्पर्शिता के धरातल से परिचित होंगे और साहित्य– क्षितिज अत्यन्त समृद्ध होगा।

सहायक ग्रंथ :-

1. हिन्दी गद्य : विन्यास और विकास, – डॉ रामस्वरूप चतुर्वेदी
2. छायावादोत्तर हिन्दी गद्य साहित्य, – विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
3. हिन्दी गद्य का विकास – रामचन्द्र तिवारी
4. हिन्दी गद्य का उद्भव और विकास – विजयेन्द्र स्नातक
5. हिन्दी गद्य का विकास– डॉ॰ रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
6. अशोक के फूल– हजारी प्रसाद द्विवेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
7. आँगन का पंछी और बंजारा मन– डॉ॰ विद्यानिवास मिश्र, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
8. अतीत के चलचित्र– महादेवी वर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
9. चिंतामणि भाग–1– रामचन्द्र शुक्ल, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
10. किन्नर के देश में– राहुल संकृत्यान, किताब महल, दिल्ली
11. मिट्टी की ओर– रामधारी सिंह दिनकर, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली